OM-3 - 2021 FINAL FILE_Page 1 and 2 10/04/2021 2:26 PM Page 1

ओमशान्ति मीडिया

मूल्यनिष्ठ समाज की रचना के लिए समर्पित

वर्ष -23 अंक - 03 मई -I-2021 (पाक्षिक) माउण्ट आबू Rs. 8.50

परमात्मा द्वारा लहराया परिवर्तन का परचम

परमात्मा का हाथ पकड़, उसे अपने साथ लेकर, उसकी कंपनी में रहकर और उसे ही अपना कम्पैनियन बनाकर वो निकल पड़ीं एक ऐसी आध्यात्मिक रूहानी यात्रा पर... जहाँ से उन्होंने न पीछे मुड़कर देखा, न रुकी, न थकी, न डरी, न संकोच किया जग का। बस चल पड़ीं...। उनकी अंतिम श्वास भी उन्हें बांध नहीं पायी, रोक नहीं पायी। उनकी रूहानियत की खुशबू, उनके प्यार और परमात्म-विश्वास से भरे बोल आज भी सुनने वाले को परमात्म-अनुभूति करा देते। एक बल-एक भरोसे पर जिस वीरांगना ने पूरे विश्व में परमात्म परचम लहराया... वो थीं... उन्हें 'थीं' कहना शायद उनके साथ न्याय नहीं होगा, इसलिए वो 'हैं'... और वो हैं हमारी, हम सबकी, पूरे विश्व की और परमात्मा द्वारा स्थापित इस यज्ञ की जान और जहान की शान 'दादी जानकी'।

राजा जनक के बारे में हम सब ने सुना है, पढ़ा है पर देखा नहीं। लेकिन आज के परिदृश्य में राजा जनक के समान स्वयं को केवल निमित्त समझ, परमात्म-श्रीमत पर परमात्मा द्वारा स्थापित ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय, जिसे परमात्मा ने 'यज्ञ' नाम दिया, जहाँ सभी अपनी कमज़ोरियों को स्वाहा कर और शक्तियों को धारण कर मनुष्य से देवता बनने की शिक्षा लेते हैं, इस यज्ञ की मुखिया होने के बाद भी दादी खुद को केवल इस विश्व विद्यालय का एक विद्यार्थी समझतीं। उन्होंने सदा यही कहा कि हम सभी इस विश्व विद्यालय के स्टूडेंट हैं और परमात्मा हमारा शिक्षक। हमें अंतिम श्वास तक यह पढ़ाई पढ़नी है और परमात्मा के कार्य को पूर्ण करना है।

स्वमान को दिया मान

परमात्म-महावाक्य(मुरली) का दिन भर न जाने कितनी ही बार अध्ययन करना और मनन-चिंतन करते हुए उसी में रमण करना उनका स्वभाव सा ही था। और उसी स्वभाव के कारण वो इस ज्ञान में स्वाभाविक और सहज हो गईं। इतनी सहज कि ईश्वरीय महावाक्य का हर वाक्य हर वक्त जैसे कि उनके मुख पर होता। एक बात... जिसको उन्होंने खुद भी पक्का किया और जिससे भी मिलतीं उसे भी पक्का करातीं कि 'मैं कौन और मेरा कौन!' कहतीं... 'मैं बाबा की बाबा मेरा।' कोई भी उनसे मिलने जाता, तो ज्ञान के सुंदर-सुंदर बोल से जैसे कि उसका श्रृंगार ही कर देतीं। सदा एक निश्चय और नशा... कि मेरा तो एक शिवबाबा दूसरा न कोई।

परमात्म निश्चय ने किया निश्चिंत

परमात्मा पर ऐसा निश्चय और रूहानी नशा ही उनके सारे लौकिक, दुनियावी बंधनों को तोड़ने का आधार बना। सारी बेड़ियों को तोड़कर दादी इस यज्ञ में आईं और आते ही परमात्मा को अपना सर्वस्व बनाकर न केवल अपने जीवन की डोर परमात्मा के हाथ में थमा दी बल्कि परमात्मा के प्रति अपने अटूट प्रेम, निश्चय और ईश्वरीय सेवाओं के लिए मर मिटने के जज़्बे से परमात्मा को भी अपनी मुट्ठी में कैद कर लिया, अपने अंग-अंग में उतार लिया। कहते हैं ना... परमात्मा केवल प्रेम और विश्वास का भूखा है, और जिससे उसे सच्चा प्रेम और विश्वास प्राप्त हो जाता, वो उसके अंग-संग उसकी छत्रछाया बनकर रहता। वो उसका साथ कभी नहीं छोड़ता... न जीते जी और न मरणोपरांत।

ईश्वर का हर कार्य... श्रेष्ठ कार्य

इसी निश्चय और नशे से दादी ने यज्ञ में अपनी सेवाओं का आरंभ किया। कम पढ़ी-लिखी पर उच्च आध्यात्मिक ज्ञान से बड़े-बड़े विद्वानों को भी नतमस्तक कराने वाली दादी जानकी ने यज्ञ की छोटी से छोटी सेवाओं को भी ईश्वर का श्रेष्ठ कार्य समझ कर किया। भारत के कोने-कोने में परमात्म-ज्ञान, परमात्म प्रेम और परमात्म निश्चय का परचम लहराते हुए ईश्वरीय शक्ति के साथ-साथ अपनी आत्मिक शक्ति और अलौकिक शक्ति का परिचय दिया।

एक में निश्चय... कोई सवाल नहीं

दादी के इसी लगन, आत्मिक शक्ति और अटूट निश्चय को देखते हुए परमात्मा ने उन्हें विदेश में ईश्वरीय सेवाओं का अगुआ(नायक) चुना। न ज़्यादा लौकिक ज्ञान, न विदेशी भाषा का ज्ञान और न विदेशी रहन-सहन(जीवनशैली) का ज्ञान... पर न कोई झिझक, न सोच-न संकोच और न ही कोई सवाल! एक पल को भी ये ख्याल उन्हें छू नहीं पाया कि मैं वहाँ कैसे और क्या करूंगी... कहाँ जाऊंगी... कैसे होगी वहाँ ईश्वरीय सेवाओं की शुरुआत! पर परमात्म-आज्ञा मिली और उसे ही सिरमाथे रख निकल पड़ीं बेहद विश्व-सेवा की सैर पर।

रूहानी प्रेम-रंग ने रंग लिये हर 'रंग'

एक कहावत सुनी थी, पर दादी ने उस कहावत को सिद्ध करके दिखाया... कि चाहे किसी मनुष्य को अपना बनाना हो या ईश्वर को, तो किसी ज्ञान, भाषा या किसी रिद्धि-सिद्धि की ज़रूरत नहीं... बस सच्चे आत्मिक, रूहानी प्रेम की ज़रूरत है। अपने इसी रूहानी प्रेम और परमात्म निश्चय के रंग ने विदेशी संस्कृति में पले लोगों को भी ईश्वरीय संस्कृति में ढ़ालकर उन्हें परमात्म रंग में रंग दिया। फिर तो जैसे विदेश में भी परमात्म रंग की नदी बह चली और विश्व के हर देश तक पहुंच कर न जाने कितनी ही मनुष्य-आत्माओं को अपने रंग में रंगते हुए अनेकों सेवाकेन्द्रों की स्थापना के निमित्त बनी। दादी की इन्हीं निःस्वार्थ, प्रेम से ओत-प्रोत सेवाओं के परिणामस्वरूप दादी जानकी केवल भारत ही नहीं अपितु पूरे विश्व की 'दादी' बन गईं और सारे विश्व में न सिर्फ परमात्म-परचम लहराया बल्कि इसे सबसे ऊँचा रखने के निमित्त बनीं।

सबकी दोस्त बनकर रहीं

2007 में ब्रह्माकुमारीज़ की मुख्य प्रशासिका दादी प्रकाशमणि के अव्यक्तारोहण पश्चात् दादी जानकी इस संस्थान की मुख्य प्रशासिका बनीं, लेकिन कभी ये भान नहीं आने दिया कि मैं प्रशासिका हूँ तो कुछ भी अपनी मर्ज़ी से चलाऊँ! हमेशा दूसरों को आगे रखा, आगे बढ़ाया, सबकी इच्छा पूछी और हमेशा

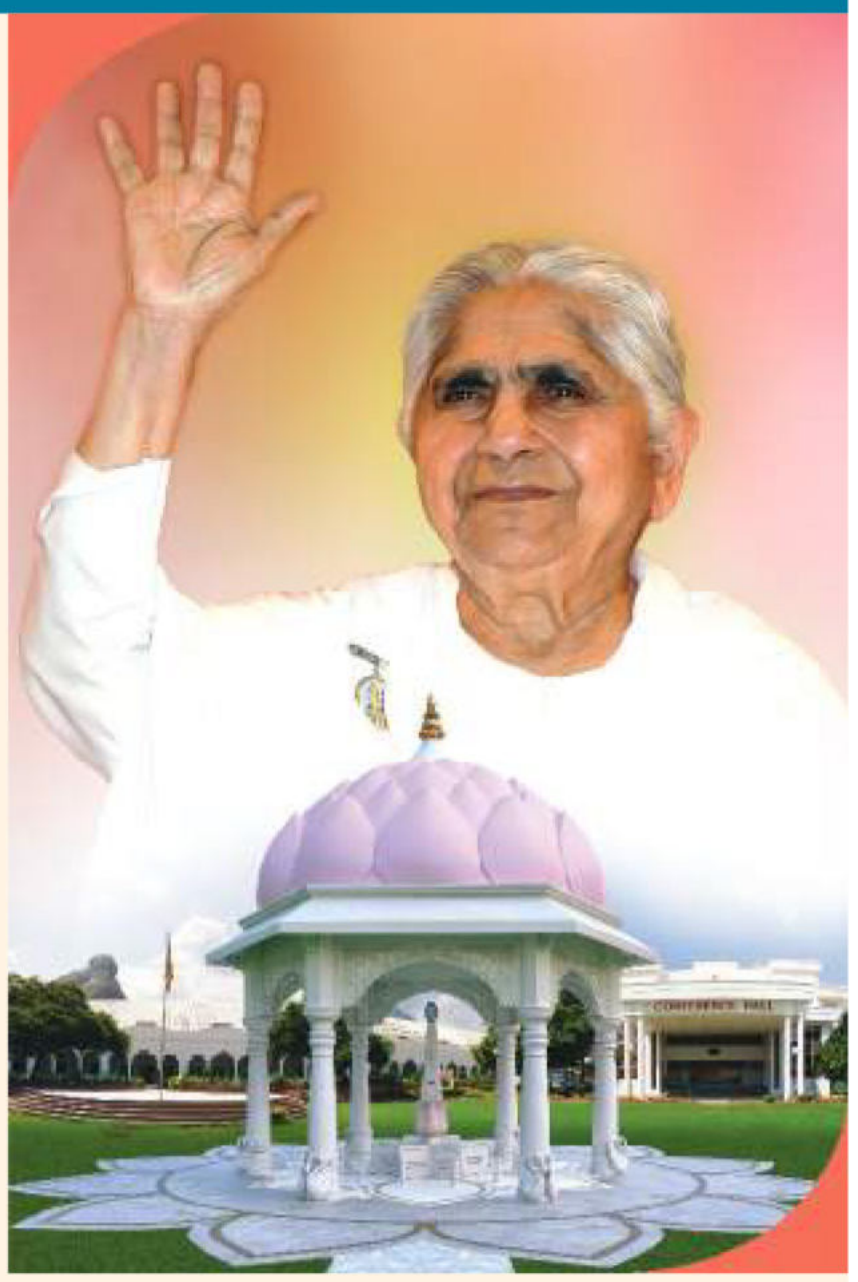

कहा कि मुझे दादी नहीं, अपना दोस्त समझो। और एक दोस्त की तरह अपनी दिल की हर बात सबसे कहतीं भी और सुनतीं भी। एक स्थान पर बैठकर ही सभी यज्ञवत्सों के दिलों का हाल जान लेतीं, उनकी ज़रूरतों को समझकर उन्हें पूरा कर देतीं। न कभी किसी को अनसुना किया और न कोई कमी रखी। वो सिर्फ संस्थान की प्रशासिका ही नहीं बल्कि सभी के दिलों की प्रशासिका बन सबके दिलों पर राज करती रहीं और करती रहेंगी।

सूक्ष्म सेवा करने... किया रूप परिवर्तन

मार्च 2020 में 104 वर्ष की उम्र में दादी अपने तन का त्याग कर, सूक्ष्म शरीर धारण कर उड़ चलीं उन सूक्ष्म सेवाओं को करने जो शायद वो तन में रहते भी न कर पातीं। इसीलिए हम कहते कि दादी कहीं गई नहीं, बस... ईश्वरीय सेवाओं को आगे बढ़ाने लिए रूप परिवर्तित कर लिया। आज एक वर्ष पश्चात् भी दादी और उनकी शिक्षायें हमारे दिलों-दिमाग में हैं और श्रेष्ठ प्रेरणाएं देकर आगे बढ़ा रही हैं। तो ऐसी विशाल हृदयी, आध्यात्मिक रूहानी ज्ञान की धनी, ईश्वरीय प्रेम और निश्चय की अटूट मिसाल, इस जहान की दादी 'दादी जानकी' को प्रथम पुण्य तिथि पर दिल से व जान से शत् शत् नमन।